P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

रामपुर रियासत के मृदंगाचार्य पंडित एवं गुरू गया प्रसाद जी का सुप्रसिद्ध घराना

आकांक्षा कृष्ण
अध्यापक,
संगीत विभाग,
सीक्रेट हर्ट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, बरेली

सारांश

मृदंग भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला एक तालवाध्य है, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत में बहुत प्रचलित है। मृदंग के उत्कृष्ण प्रदर्शन मन्दिरों से दरवारों तक रहे है। नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि में मृदंग प्रचलन, ध्रुपद व कथक नृत्य में विशेष भूमिका रखता है। मृदंग बादन स्वतंत्र एवं कथन नृत्य में प्रदर्शन किया जाता रहा है।

घराना शब्द का शाव्दिक अर्थ है 'परिवार' विभिन्न संगीतकार, अपनी संगीत शैली का श्रेष्ठ व प्रभावशाली प्रदर्शन करने के कारण दर्शकों, संरक्षकों या उस्तादों, साथी संगीत कारों के बीच लोकप्रिय हो गये, तत्पश्चात उन्हें पहचान दी गयी। जो तत्कालीन क्षेत्रों, शहरों, रियासतों व साम्राज्यों के नाम से जोड़ कर दी जाने लगी। तभी से घरानों का नामकरण होने लगा। आरम्भ में पिता–पुत्र के रूप में घराने विकसित हुए परन्तु समय के साथ, संगीत परिवार वंश का विस्तार होने के कारण, 'गुरू–शिष्य' को भी घराने की परिधि में परिभाषित किया जाने लगा घरानों में वाद्य कलाओं का किसी विशेष शैली में प्रदर्शन हो, इसका महत्व व आधार है।

मुख्य शब्द : संगीत, तालवाध्य, परिवार

प्रस्तावना

मृदंगाचार्य पण्डित गया प्रसाद जी के पूर्व पूर्वज पंडित काशी प्रसाद वनारस में राज्य पुरोहित थे। वहीं वनारस में उन्होंने नीलाम्वर, पीताम्बर गन्धर्वों से मृदंगा की शिक्षा ग्रहण की, यहीं से पंडित जी के वंश में मृदंग कला का पीढ़ी दर पीढ़ी विकास एवं ज्ञानर्जन किया गया जो आज भी चला आ रहा है। पंडित महादेव प्रसाद मृदंगाचार्य से उनके पुत्र पंडित सगुन प्रसाद मृदंगाचार्य से पंडित सुखलाल प्रसाद मृदंगाचार्य से पंडित घासी प्रसाद मृदंगाचार्य से पंडित कृपा प्रसाद मृदंगा चार्य से पंडित गणेश प्रसाद से पंडित भवानी प्रसाद से पंडित ईश्वरी प्रसाद (गुप्ते जी) मृदंगाचार्य में पिता–पुत्र की परम्परा में मृदंग को परम्परागत ग्रहण कर, विकास किया गया।

तत्पश्चात ईश्वरी प्रसाद गुप्ते जी अपने दोनों पुत्र कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य एवं पंडित रामप्रसाद जी मृदंगा चार्च के साथ ग्वालियर आ गये और बाद में कुदऊ सिंह दतिया (मध्य प्रदेश) को महाराज भवानी सिंह के दरवार में राजाश्रय प्राप्त कर लिया। परन्तु दुर्भाग्यवश कुछ समय पंडित रामप्रसाद मृदंगाचार्य परलोक सिधार गये।

पंडित कुदऊ सिंह मृदंगा चार्य

परिवार का भार पंडित कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य पर आ गया। कुदऊ सिंह ने अपने घराने के शिष्य भवानी दास से अपने वंश तालीमों घरानों विविधताओं को सीखा तथा रियासत का आश्रय व पिता स्थान प्राप्त किया। कालान्तर में ग्वालियर रियासत के एक पागल हाथी को मृदंग सुनाकर बस में किया। महाराजा ने प्रसन्न होकर पंडित कुदऊ सिंह को वही हाथी और मृदंग भर कर अशर्फी देकर सम्मानित किया, उनके भाई पंडित राम प्रसाद मृदंगाचार्य घर पर ही मृदंग की शिक्षा देते थे। पंडित कुदऊ सिंह ने अपने घराने के 72 कायदों को कंठस्थ कर महारथ हांसिल कर लिया था। तथा वाद में झांसी उ0प्र0 के दरवारी कलाकार नियुक्त होने पर झांसी की रानी की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने पंडित कुदऊ सिंह को बन्दी बना लिया। कुदऊ सिंह ने अपनी पुत्री की शादी में पंडित भवानी प्रसाद से की तथा दहेज चौदह सौ प्रश्ने दी। जिन्हें दहेज की परन कहा जाता है। और पंडित जी का घराना उन परनों को नहीं बजाता है, आपको लगभग 22 सौ परने कंठस्थ थीं, आपकी हस्तलिखित पुस्तकें आज भी दतिया (मध्य प्रदेश) के संग्रालह में सुरक्षित हैं। आज उत्तर भारत में यह मृदंगा का घराना कुदऊ सिंह के घराने के नाम से विख्यात है।

अध्ययन का उद्देश्य

मृदंग सम्राट पं0 गया प्रसाद जी रामपुर के प्रसिद्ध घराने कुदऊ सिंह के वंशज हैं। कुदऊ सिंह जी गायक सम्राट तानसेन, सदारंग, अदारंग एवम् बैजवाबरा आदि के समान प्रख्यामि वादक कलाकार थे। भारत की समस्त रियासतों और रजवाड़ों में आपकी ख्याति प्राप्ति थी। पं0 गया प्रसाद जी मृदंगाचार्य इन्हीं संगीत कुदऊ सिंह के वंशज हैं। अतः इनका तथा इनके घरानेदारों का उल्लेख विलुप्त की कगार पर है। इसी दिशा में प्रयासरत होते हुये शोधकर्ता ने इस शोधपत्र के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है।

पंडित ईश्वरी प्रसाद मृदंगाचार्य

पंडित ईश्वरी प्रसाद गुप्त जी मृदंगचार्य के कनिष्ठ पुत्र राम प्रसाद मृदंगाचार्य थे। इन्होंने अपने घराने की परम्परा के अनुसार 72 कायदे की वजत और पढ़त के साथ विशेष लयकारी बजाते हुए मृदंग की शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने शिव ताण्डव परन लंकापति द्वारा शिव को प्रसन्न करने के लिए बड़े चाव से मृदंग बजाते। इसके अलावा वादलों के टिप–टिप बरसना, बिजली का धड़कना, तेज वर्षा की परवावज पर ऐसी ध्वनि निकालते थे कि श्रोता मुग्ध हो विस्मित हो जाते थे। इनका भी अपने ज्येष्ठ पंडित कुदऊ सिंह की भांति मृदंग पर बहुत मीठा हाथ चलता था तथा पूरी हथेली से मृदंगों के बोलों को निकाला करते थे। आप ध्रुपद धमार गायकी के साथ तन्त्रकारियों के साथ संगत करने में पूरा ज्ञान रखते थे। इसी बीच गायक वादक का घात और अना घात के प्रयोग मुंह से निकलने नहीं देते थे, अपनी पखावज की थाप से उनके मुंह पर जबाव देते चले जाते थे। आपको अनेकों परने कंठस्थ थीं। आप विशेषता घर पर ही मृदंग सिखाते थे। इसीलिए आपके अनेक शिष्य थे। पंडित कुदऊ सिंह कभी दतिया दरवार में कभी ग्वालियर के महाराज के आश्रय में कभी झांसी के दरवारों में दरवारी कलाकार रहे थे, परन्तु आप स्थाई रूप से दतिया में ही रहते थे।

पदम श्री पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य

पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य का जन्म 1881 में दतिया में हुआ था। पंडित अयोध्या के प्रसाद के पिता पंडित गया प्रसाद तो श्रेष्ठ मृदंगाचार्य थे तथा उनकी माता श्रीमती जमुना देवी भी प रवावज के बजत में निपुण थीं। वह दतिया के दरवारी परवावजी पंडित जानकी प्रसाद मृदंगाचार्य की सगी बहिन थी अतः उन्हें परवावज की बजत सिंद्ध थी तथा पितामह के ज्येष्ठ भ्राता पंडित कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य, पूरा परिवार परवावज में श्रेष्ठता व प्रभाव रखता था। पांच वर्ष की अवस्था में पंडित अयोध्या प्रसाद को परवावज सिखाना आरम्भ कर दिया गया। वाल्यावस्था से ही आपको 72 कायदों का निकास सिखाया जाने लगा। तत्पश्चात पंडित जानकी प्रसाद के पास मृदंग की शिक्षा के लिए दतिया भेज दिया गया। इन्होंने किसी सरकारी स्कूल में शिक्षा ग्रहण नहीं की। धार्मिक शिक्षा का अध्ययन किया जिसमें गीता, रामायण, रामचरित मानस, विनय पत्रिका व विभिन्न पुराणों का अध्ययन किया। जिज्ञासावश इन्होंने घर परिवार से छिपकर अपनी मित्रमंडली में अंग्रेजी भाषा का भी अध्ययन किया, परन्तु इनकी मुख्य शिक्षा परवावज ही थी। पंडित कुदऊ सिंह के शिष्य केवल दास से इन्होंने पंडित कुदऊ सिंह की रचित परनों को सीखा तथा पखावज के और परम्परागत गुणों और तालीमों को हांसिल किया राजनैतिक उलट, फेर के समय में यह दतिया से रामपुर रियासत भी आते–जाते रहते थे। पंडित कुदऊ सिंह के अंग्रेजों द्वारा बन्दी बनाये जाने के वाद यह परिवार सहित रामपुर रियासत की शरण में आ गये और उन्होंने रामपुर रियासत से सिफारिश कर अपने ज्येष्ठ पितामह पंडित कुदऊ सिंह को अंग्रेजों की कैद से मुक्त भी कराया जो झांसी की रानी के अभरक्षक थे उनकी मृत्योपरान्त अंग्रेजों ने उन्हें बन्दी वना लिया था। भारत सरकार ने उन्हें ''पदम श्री'' की उपाधि से सम्मानित किया। वे वास्तव में पंडित कुदऊ सिंह के प्रतिनिधि और वंशधर थे। 1977 को उनकी मृत्यु हो गयी। आपके चार पुत्र पंडित शीतला प्रसाद, मृदंगाचार्य नारायन प्रसाद मृदंगचार्य, कुन्दन प्रसाद मृदंगचार्य तथा श्री रामजी लाल मृदंगाचार्य हैं।

पंडित शीतला प्रसाद मृदंगाचार्य

पंडित शीतला प्रसाद का जन्म 1906 बदायूँ की बिल्सी तहसील में हुआ था। जन्म के समय आपके पिता पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य बिल्सी के नवाब हैदर अली खां साहब थे दरवार मृदंग वादक नियुक्त थे, पंडित शीतला प्रसाद ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते पंडित अयोध्या प्रसाद के अधिक स्नेही थे। पांच वर्ष की अवस्था से ही इनकी मृदंगा की शिक्षा परम्परागत तरीके से आरम्भ कर दी गयी। मृदंग कायदे कंठस्थ कराये गये। हस्त भी अच्छा मीठा था। परम्परागत थाप मृदंग पर घराने की शैली के अनुसार देते थे। परन्तु दुर्भाग्यवश युवास्था में ही आपको मिर्गी के दौरे पड़ने लगे। अतः पिता पण्डित अयोध्या प्रसाद ने उन्हें घर रहकर ही छोटे शिष्यों को मृदंग की शिक्षा देने का कार्य सौंप दिया। इन्होंने कभी भी मंच पर प्रदर्शन नहीं किया। आपने अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की तथा 1936 में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की आपके दो पुत्र हुए, ज्येश्ठ पुत्र पंडित सूर्यकान्त शुक्ला मृदंगाचार्य तथा कनिष्ठ पुत्र प्रभावकान्त शुक्ला, तवला वादक हैं।

पंडित नारायण प्रसाद जी मृदंगाचार्य

पंडित नारायण जी मृदंगाचार्य पंडित गया प्रसाद जी के द्वितीय श्रेणी के पुत्र थे, ज्येष्ठ पंडित शीतला प्रसाद थे तथा छोटे पंडित कुन्दन प्रसाद मृदंगाचार्य तथा सबसे छोटे पंडित रामजी लाल शर्मा सबसे छोटे थे। माता जी का नाम श्रीमती किशोरी देवी था। पंडित नारायण प्रसाद को रामपुर की रियासत का आश्रय प्राप्त था। उस समय नबाव अली खां साहब नवाब रियासत थे। पंडित नारायण प्रसाद बड़े–बड़े कलाकारों से संगत करते थे, वे स्वयं ताल परन बजाया करते थे। आपको सोलों बजाते समय किसी सारंगी या हारमोनियम के द्वारा ताल मात्रा दिखाने की आवश्यकता नहीं थी। 36 वर्ष की अल्प आयु में इनका देहान्त हो गया।

पंडित कुन्दन प्रसाद

आप मृदंगाचार्य गया प्रसाद जी की तीसरी नम्बर की संतान थे आपने भी 5 वर्ष की आयु से मृदंग का

सीखना आरम्भ किया एवं अच्छे मृदंग वादक बनें, परन्तु सोलह–सत्रह वर्ष की आयु में आपका निधन हो गया।

पंडित राम जी लाल शर्मा मृदंगाचार्य

पंडित रामजी लाल शर्मा, वर्तमान में आकाशवाणी लखनऊ पर परवावज के पद पर कार्यरत हैं, आप आकावाणी लखनऊ में 'ए' श्रेणी के कलाकार हैं, पंडित रामजी लाल शर्मा, पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य की सबसे छोटी व चौथी संतान थे। इनकी माता श्रीमती किशोरी देवी पंडित अयोध्या प्रसाद जी की दूसरी पत्नी थी। पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य इनके पितामाह थे। झांसी की रानी की मृत्यु के समय पंडित कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य जो झांसी की रानी की अंगरक्षक थे, को ग्वालियर में अंग्रेजों ने बन्दी बना लिया। इस राजनैतिक उथल पुथल में पंडित गया प्रसाद ने रामपुर में आकर आश्रय ले लिया था और पंडित गया प्रसाद का परिवार रामपुर में ही बस गया था। यद्यपि आपके पिता पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य बदायूं तहसील के अर्न्तगत बिल्सी रियासत के दरवार में पखावजी के पद पर थे। लेकिन पंडित रामजी लाल शर्मा का जन्म रामपुर में ही हुआ था। पंडित गया प्रसाद काफी बृद्ध हो चुके थे। अतः परिवार की परम्परा के अनुसार इनको वह सभी 72 कायदे और परनों आदि की बजत और पठत पंडित गया प्रसाद के जीवन में सिखा दिये गये। इसमें मुख्य सहयोग गायक रहिम्मुद्दीन खां डागुर एवं पंडित गया प्रसाद जी के शिष्य कैलाश चन्द्र देव वृहस्पति जी ने किया। पंडित राम जी लाल शर्मा की गिनती प्रदेश श्रेष्ठ मृदंग वादकों में होती है। आपका स्वतंत्र मृदंग वादन बहुत मीठा है, जिसे सुनकर श्रोता भाव विभोर होरक वाह–वाह करते हैं। आपकी वादन शैली घराने की परम्परा के अनुसार ही है तथा घराने की हजारों से अधिक परने आपको कंठस्थ हैं। आप मृदंग वादन के साथ शौकिया तवला वादन भी करते हैं।

पंडित सूर्यकान्त शुक्ला मृदंगाचार्य

पंडित सूर्य कान्त शुक्ला का जन्म जुलाई 1939 में रामपुर रियासत में हुआ था। आप मृदंगाचार्य पंडित शीतला प्रसाद की ज्येष्ठ संतान थे। पंडित शीतला प्रसाद के दो ही संताने थी। पंडित सूर्यकान्त शुक्ला पांच वर्ष के दो ही संताने थी। पंडित सूर्यकान्त शुक्ला पांच वर्ष की अवस्था से ही मृदंग की पढ़ाई और वजल आरम्भ कर दी थी। युवा होने तक आप एक श्रेष्ठ मृदंग वादक के रूप में उभरे। आपने घराने के सभी कायदों और परनों आदि में आपने काफी निपुणता से हांसिल की। परन्तु उस समय संगीत के क्षेत्र में मृदंग को बढ़वा मिलना बंद हो गया था। शिक्षा के क्षेत्र बहुत विकास हो गया थां पंडित सूर्यकान्त शुक्ला एक अच्छे अध्यापक के रूप जाने और पहचाने जाते हैं। आपने रामपुर के तत्कालीन नवाब सैय्यद रजा अली खां के सहयोग से जनपद रामपुर प्रथम संगीत महाविद्यालय की स्थापना की तथा इस महाविद्यालय को प्रदेश और देश के संगीत की मान्यता प्राप्त संस्थाओं से सम्बद्ध भी कराया।

आपने घराने की 72 कायदों और अनेका नेक परने को कंठस्थ किया। एक सार्वजनिक पर्व पर कोठी खासबाग के दरवारी मंच पर राजसी कार्यक्रम में चालीस मिनट तक पवावज का स्वतंत्र प्रदर्शन किया तथा लोकप्रियता हांसिल की। इसके अतिरिक्त लखनऊ के रविन्द्रालय दिल्ली, आगरा, मथुरा, ग्वालियर आदि कई स्थानों पर संगीत के आयोजित सरकारी और अन्य कार्यक्रमों में झाड़, कुआड़, विझाड़, महाविझाड़, लड, लपटें भरवा आदि का प्रदर्शन किया। यह कहना अतिश्योवित नहीं होगा कि पंडित सूर्यकान्त शुक्ला जैसे मृदंग वादकों के कारण आज संगीत में पखावड़ा जीवित हैं और संगीत के क्षेत्र में परवावज को कोई प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों पंडित सूर्यकान्त शुक्ला मृदंगाचार्य परवावज की श्रेष्ठता को निपुणता को साथ धरोहर बनाये हुये हैं।

पंडित प्रभाकान्त शुक्ला (तबला वादक)

पंडित प्रभाकान्त शुक्ला का जन्म 1952 में रामपुर जनपद में हुआ। आप पंडित शीतला प्रसाद के कनिष्ठ पुत्र एवं पंडित सूर्यकान्त शुक्ला मृदंगाचार्य के कनिष्ठ भ्राता थे। आरम्भ में घराने की परम्परा के अनुसार आपको भी मृदंग सिखाया गया। परन्तु आपने तबलों को चुना। आपने प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद से तबले में प्रभाकर किया। इसके अलावा आपने परास्नातक भी किया। आपको धार्मिक कार्यक्रमों में काफी रूचि थी। 1995 में आपका देहान्त हो गया।

पंडित भूपेन्द्र शर्मा मृदंगाचार्य

पंडित भूपेन्द्र शर्मा, मृदंगाचार्य पंडित गया प्रसाद के पौत्र हैं तथा पंडित राम जी लाल शर्मा के ज्येष्ठ पुत्र हैं। पंडित अनुराग शर्मा मृदंगाचार्य आपके कनिष्ठ भ्राता है। पंडित भूपेन्द्र शर्मा ने अपने घराने के सभी 72 कायदों को सिलसिले से पढ़न्त और बजत के साथ विशेष लयकारियों में बजाते हुए अध्य्यन किया है। आपका वोलो का निकास अपने प्रति पितामाह पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य की भांति है। घराने की प्रचलित परम्पराओं के अनुरूप पंडित राम जी लाल शर्मा जी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र पंडित भूपेन्द्र शर्मा को मृदंग में एक निपुण व दक्ष कलाकार बनाया है। पडित भूपेन्द्र शर्मा आकाशवाणी केन्द्र रामपुर, लखनऊ एवं दिल्ली में अपने मृदंग वादन का स्वतंत्र व श्रेष्ठ प्रर्दषन कर पुरस्कृत हो चुके हैं। आपने मृदंग में प्रतियोगिताए भी जीती हैं तथा आप सार्वजनिक आयोजन में भी अत्यन्त प्रभावशाली प्रदर्शन कर सराहना भी प्राप्त कर चुके हैं। मृदंग के अलावा आपको स्नातक की उपाधि प्राप्त है, आपका सामाजिक दायरा बहुत बड़ा मृदंगा वादक के अलावा और बहुत व्यवहारिक व्यक्ति भी हैं।

पंडित अनुरागशर्मा मृदंगाचार्य

पंडित अनुराग शर्मा को पंडित श्री राम जी लाल शर्मा के कनिष्ठ पुत्र एवं पंडित गया प्रसाद मृदंगाचार्य के प्रति पौत्र होने का गौरव प्राप्त है घराने की परम्परा के अनुसार आपने घराने की सभी कायदों और परनो पढ़त और वजत हांसिल की है। आप एक दक्ष मृदंग वादक हैं।

डा0 चितरंजन देव शुक्ल मृदंगाचार्य

डा0 चितरंजन देव शुक्ल मृदंग वादन में पूर्ण दक्ष एवं निपुण वादक हैं। आज जब मृदंग वादन विलुप्ता की ओर जा रहा है। आधुनिक संगीतज्ञों ने इस वाध्य को उपेक्षित कर दिया है। ऐसे समय पंडित गया प्रसाद

मृदंगाचार्य के घराने से उनके प्रति पैत्र ने मृदंग वादन के क्षेत्र में देश–विदेशों में भी ख्याति और सम्मान प्राप्त किया है, आपका जन्म 20 जून 1971 को जनपद रामपुर प्रसिद्ध उस घराने में हुआ, जिसमें लगभग 500 वर्षों मृदंग वादन, पठन पाठन एवं बजत सिद्ध व पूजित है। घराने में एक से बढ़कर एक मृदंग वादक रह चुके हैं, जिन्होंने अपने–अपने समय में अत्यन्त ख्याति और लोक प्रियता हांसिल की थी। डा0 चिरंजन देव शुक्ल का मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रदत्त नेशनल स्कालर्शिप विदेशों में परवावज के प्रचार प्रसार हेतु भारत सरकार के भारतीय सांस्कृतिक (सी0आई0सी0ओ0आर0) द्वारा चयन हुआ है। डा0 चितरंजन देव शुक्ल ने अपनी मृदंग की शिक्षा अपने पिता पंण्डित सूर्यकान्त शुक्ल एवं दादा पंडित शीतल प्रसाद मृदंगाचार्य के द्वारा अर्जित की है। आप देश–प्रदेश के अनेकानेक संगीव सम्मलेन में भाग लेकर पुरस्कृत हो चुके हैं। जिसमें स्वतंत्र वादन एवं ध्रुपद एवं वीणा के साथ मंच पर प्रदर्शन कर लोकप्रियता हांसिल कर चुके हैं। आज के युग में प्रायः मृदंग घरानों का अभाव हो गया है। परन्तु पंडित गया प्रसाद मृदंगा वंशजों ने उत्तरी भारत में अपने घराने की इस धरोहर को स्तम्भ बना रखा है डा0 चितरंजन देव शुक्ल ने कानपुर, लखनऊ, वनारस, आगरा, ग्वालियर, मुरादाबाद, बरेली आदि से संगीत समारोह में आयोजनों में भाग लेते हुए स्वतंत्र वादन में अत्याधिक सम्मान प्राप्त किया है। आपको अवध नरायण संगीत समारोह कानपुर में पुरस्कृत भी किया गया है। डा0 चितरन्जन देव शुक्ल ने संगीत के क्षेत्र में बी0 हाई0 ग्रेड परवावज, संगीत प्रवीण परवावज, संगीत प्रवीण तवला, संगीत प्रभाकर गायन एवं शिक्षा वाचस्पति की उपाधियां विभिन्न शिक्षा संस्थानों से प्राप्त की है।

पंडित रवि रंजन देव शुक्ल मृदंगाचार्य

पंडित रवि रंजन देव शुक्ल का जन्म पण्डित सूर्य कान्त शुक्ल के परिवार में कनिष्ठ पुत्र के रूप में अगस्त 1989 को जनपद रामपुर में हुआ, पंडित रवि रंजन मृदंग शिक्षा पितामाह शीतला प्रसाद की गोद में बैठकर चार थपिया मुंह से बुलाकर कर हाथ से वजवा कर सिखाया गया। तथा 2001–02 में संगीत समिति इलाहाबाद से परवावज की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है।

आपने उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की सम्भागीय प्रतियोगिता 1994 में प्रथम स्थान प्राप्त किया तत्पश्चात प्रदेशिक संगीत प्रतियोगिता 1995 स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आपको उस्ताद अलाउद्दीन खां, संगीत अकादमी भव कण गंगा भोपाल से छात्रवृत्ति मिलती थी। आपने प्रदेश के विभिन्न जनपदों में संगीत के मंच पर मृदंग का स्वतंत्र प्रदर्शन कर अत्यधिक लोकप्रियंता हांसिल की है। आपने दूरदर्शन के दिल्ली प्रसारण से मृदंग वादन प्रस्तुत यिका। दुर्भाग्य वर्ष अक्टूबर 2002 में बीस वर्ष की अल्प आयु में आपका देहांत हो गया। मृदंग घराने ने अपना उभरता हुआ सितारा खो दिया।

गुरू–शिष्य परम्परा

इस घराने में गुरू शिष्य परम्परा घराने के आरम्भ से विकसित होती रही है। पंडित सूर्य कान्त शुक्ला मृंदगाचार्य के पास उनके घराने की एक हस्त लिखित पोथी है। जिसमें घराने के वंशज कलाकारों ने अपनी–अपनी तालीमें व अनुभव और अनेकानेक प्रसंग भी लिखे हैं। जिसमें घराने के अनेकों शिष्यों का उल्लेख है, परन्तु उनका व्यक्तिगत विवरण उल्लेखित नहीं किया गया है, स्वयं घराने के वंशजों ने अपने पिता या पितामाह के शिष्यों से आपनी तालीमें पूरी की है दर्शाया गया है।

भवानी दास मृदंगाचार्य

पोथी में भवानीदास नाम से घराने के शिष्य का उल्लेख किया गया। देश की राजनैतिक उथल–पुथल के कारण पंडित ईश्वरी प्रसाद (मृदंगाचार्य) जो कुदऊ सिंह के पिता थे, को वनारस से ग्वालियर आना पड़ा कुदऊ सिंह अपने पिता की ज्येष्ठ संतान थे। कनिश्ठ भाई रामप्रसाद (मृदंगाचार्य) का असमय निधन हो गया। अतः परिवार के पोषण की जिम्मेदारी कुदऊ सिंह पर आ गयी उस समय तक आपने मृदंग की पठन्त वजत की अच्छी तालीमें प्राप्त कर ली थीं, परन्तु उसे और अधिक प्रखर बनाने के लिए आपको घराने के शिष्य भवानी दास का सहयोग लेना पड़ा। इसी संदर्भ में घराने शिष्य भवानी दास का उल्लेख मिलता है।

केवल दास मृदंगाचार्य

केवल दास मृदंगाचार्य पंडित कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य के शिष्य थे। घराने की परम्परा के अनुसार इनको घराने सभी 72 कायदे की वजन्त और पठन्त में आप निपुण थे। पंडित कुदऊ सिंह द्वारा रचित परनों को बजाने में दक्षता प्राप्त थी तथा आपकी गिनती पंडित कुदऊ सिंह के काफी प्रतिभावशाली व योग्य शिष्यों में होती थी। पंडित कुदऊ सिंह की अंग्रेजी द्वारा झांसी में गिरफ्तारी के वाद पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य ने रामपुर रियासत में आश्रय प्राप्त किया था और रामपुर में आकर वस गये थे। आपको रियासत में कलाकार का स्थान मिल गया था। परन्तु दरवार में प्रदर्शन के समय कोई कमी या गलती न हो इसलिए आपने घराने के शिष्य केवलदास से कुदऊ सिंह द्वारा रचित परनों की पठन्त और वजन्त की तालीम में महारथ हांसिल की, क्योंकि पंडित अयोध्या प्रसाद के मन में यह बात थी कि दरवार में मृदंग वजाते समय या संगत या प्रदर्शन में साथी कलाकारों के सामने अपना बर्चस्व बनाये रखना है।

पंडित कैलाश चन्द्र देव वृहस्पति मृदंगाचार्य

घराने की शिष्य परम्परा में पंडित कैलाश चन्द्र देव वृहस्पति जी का उल्लेख पंडित अयोध्या प्रसाद के शिष्यों के रूप में मिलता है। आप घराने की बंशज पंडित रामजी लाल शर्मा के सहयोगी व अभिन्न मित्र भी हैं। आप दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र दिल्ली के चीफ प्रोडूसर हैं आपका हाथ बहुत मीठा है, घर की परम्परागत वजत शैली के साथ आप भी पूरी हथेली से मृदंग के बोलों का निकास करते हैं। घराने के 72 कायदे और अनेकानेक परनों में आपको पठन्त और बजत में िनिपुणता हांसिल है।

विद्याशंकर अनलेश मृदंगाचार्य

विद्या शंकर अनलेश को पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य के शिष्य होने का गौरव प्राप्त था, विद्या शंकर अनलेश का जन्म 1918 में जिला बरेली में हुआ था आपके पिता का नाम जीवन राम था, आपने घराने की परम्परा के

अनुसार 72 कायदे और अनेकानेक परने कंठस्थ कर ली थी। आप श्रेष्ठ तलवा वादक भी थे आपने हिन्दी, संस्कृति, अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की, आपने तवला वादक शम्भू दयाल से तवला वादन की शिक्षा ग्रहण की थी। अनलेश जी ध्रुपद धमार गायकी के साथ तंत्रकारियों के संगत में परिपूर्ण थे, आपके घराने की तालीम में गायक वादन का घात अनाघात के प्रयोग में मुंह से निकलने नहीं देते थे, अपनी पखावज को थाप से उनके मुंह पर जबाव देते चले जाते थे, आप गूथ, भरतार, गंजावरन, मदन परन, झूलना, चक्रदार कमला, धातु, अनाघात, आड़ कुआड़, विगाड़ कुदऊ मृदंगाचार्य द्वारा रचित परने बड़े मीठे हाथ से बजाते थे, आपने भी कुछ परनों की रचना की है। आपने 25 से अधिक लेख पखावज पर लिखे हैं, जिनको हाथरस से प्रकाशित संगीत अंको में 1981 से 2006 के बीच प्रकाशित किया गया है। 2006 में आपकी मृत्यु हो गयी।

गौरव शंकर मृदंगाचार्य

गौरव शंकर मृदंगाचार्य श्री विद्या शंकर मृदंगाचार्य के पुत्र हैं और आप भी पंडित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य के शिष्य हैं। आपने घराने की परंपरा के अनुसार 72 कायदों और अनेकानेक परनों की तालीम पंडित अयोध्या प्रयाग मृदंगा चार्य से प्राप्त की है, परन्तु बीच में पंडित अयोध्याध्या प्रसाद की वृद्धता के कारण आपने पंडित सूर्यकान्त शुक्ला मृदंगाचार्य से अपनी तालीमें पूरी की हैं। इन के पिता अनलेश जी मृदंग में अत्यंत दक्ष थे। अतः उन्होंने अपने पुत्र को मृदंग में पूर्णतः व निपुणता की शिक्षा दी है, आपने प्रयास संगीत समिति, इलाहाबाद से तबले में प्रभाकर की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है, सन् 1981 में भारत सरकार से नेशनल अवार्ड प्राप्त किया है। आपने प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद से पखावज में भी प्रभाकर किया है, वर्तमान में आप केन्द्रीय विद्यालय रामपुर में संगीत विभाग में अध्यापक हैं।

विजय शंकर आर्य मृदंगाचार्य

विजय शंकर आर्य मृदंगाचार्य जनपद बरेली के मोहल्ला ब्रहम्पुरा स्थित गोंदनी चौक के निवासी हैं, आपने मृदंग की दीक्षा की शिक्षा पंडित अध्योध्या प्रसाद मृदंगाचार्य से प्राप्त की है। घराने की परंपरा के अनुसार आपने भी 72 कायदों में तथा परनों का विधिवत पठन्त व वजन्त हांसिल की। आपने प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद से पखावज में प्रभाकर की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की है, साथ ही आपने तबले में रूचि होने के कारण प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद से प्रवीण की उपाधि प्राप्त की है, इसके अतिरिक्त आपने एम.एस.सी. व एल.टी. की उपाधि भी प्राप्त की है, वर्तमान में आप राजकीय इंटर कॉलेज बदायूं में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं। आप मृदंग वादन में पूर्ण निपुण व दक्ष हैं, आपको लहकारी में विशेष दक्षता हांसिल है, आपकी दूसरी व्यवस्था यह है कि आप अपने पैर से ताल मात्रा देते हुये पखावज बजाते रहते हैं। आप निपुणता के साथ पखावज का स्वतंत्र वादन करते हुये श्रोताओं को भाविभोर कर देते हैं।

डा0 मीनू सक्सेना मृदंगाचार्य

डा0 मीनू सक्सेना मृदंगाचार्य जनपद बरली के मोहल्ला चाहवाई की निवासिनी हैं, आपके पिता का नाम श्री हरीश चन्द्र सक्सेना है, आपका विवाह रामपुर निवासी श्री राजीव कुमार सक्सेना के साथ हुआ है। आपने कुदऊ सिंह के मृदंग घराने के मृदंगाचार्य पण्डित सूर्यकान्त शुक्ला से मृदंग की तालीम हांसिल की है। घराने की परंपरा के अनुसार आपने 72 कायदे एवं पंडित कुदऊ सिंह मृदंगा द्वारा रचित परनों में पठन्त व वजन्त हांसिल की है। आपने एम.जे.पी. रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली से संगीत में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है आपको मृदंग में ध्रुपद और कथक नृत्य में संगीत में विशेष रूचि है। आपका हस्त बहुत मीठा है। वर्तमान में आप दयावंती अकादीम मोदीनगर रामपुर में संगीत की शिक्षिका के पद पर कार्यरत है।

निष्कर्ष

उपरोक्त से स्पष्ट है कि रामपुर रियासत के मृदंगा चार्य पंण्डित गुरू गया प्रसाद का घराना, मृदंग के क्षेत्र में पश्चिमी भारत का प्रसिद्ध और पुराना घराना है, यह घराना लगभग पिछले 500 वर्षों से मृदंग के क्षेत्र में एक से बढ़कर एक मृदंग वादक को प्रस्तुत करता रहा है। इस घराने में पण्डित कुदऊ सिंह मृदंगा चार्य और पण्डित अयोध्या प्रसाद मृदंगाचार्य जैसे श्रेष्ठतम मृदंगाचार्यों ने जन्म लिया है। मृदंग के क्षेत्र में इस घराने का परिचम बहुत दृढ़ है। इस घराने की परंपरा के अनुसार 72 कायदे एवं लगभग 4000 से ऊपर परने जिसमें अधिकतर पंडित कुदऊ सिंह मृदंगाचार्य द्वारा रचित हैं। जो दतिया (मध्य प्रदेश) के संग्रालह में आज भी सुरक्षित हैं। घराने के मृदंगाचार्य विद्याशंकर अनलेश ने हाथरस से प्रकाशित संगीत पत्रिका में वर्ष 1981 से 2006 तक 25 से ऊपर लेख लिखकर प्रकाशित कराये हैं। घराने के वंशज मृदंगाचार्य पंडित सूर्यकान्त शुक्ला के पास एक हस्तलिखित पोथी है, जिसमें विभिन्न प्रसंग आदि हैं, पोथी अत्यंत जर्जर अवस्था में है। इस प्रकार यह कहना अतिश्योकित नहीं होगा कि गुरू पण्डित गया प्रसाद मृदंगा चार्य का घराना पश्चिम भारत के मृदंग क्षेत्र में श्रेष्ठ और विख्यात घराना है। जिसके वंशज और शिष्य आज भी मृदंग के ज्ञान, पठन्त और वजन्त को कायम बनाये हुये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संगीत रत्नाकर प्रथम भाग :पं0 शार्ङ्ग देवी*
2. *भारतीय संगी वाद्यः पं0 लालमणि मिश्र*
3. *संगीत चिन्तामणि (प्रथम खण्ड): आचार्य वृहस्पति*
4. *संगीत चिन्तामणि (द्वितीय खण्ड), आचार्य वृहस्पति , सुमित्रा कुमारी चौहान एवं श्रीमती सुलोचना वृहस्पति।*
5. *तबला – पखावज :डॉ0 आवान0 ऐ0 मिस्त्री,*
6. *भारतीय संगीत का इतिहासः उमेश जोशी*
7. *मुसलमान और भारतीय संगीत :डॉ0आचार्य बृहस्पति*
8. *संगीत के घरानों की चर्चा :डॉ0 सुशील कुमार चौबे।*
9. *हमारे प्रिय संगीतज्ञ:हरीश चन्द्र श्रीवास्तव*
10. *रामपुर की : प्रभु लाल गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस।*
11. *रामपुर की सदारंग परपराःश्रीमती सरयू कालेकर और आचार्य बृहस्पति।*
12. *श्री.एस.के.शुक्ल, मृदंगाचार्य :हस्तलिखित पोथी पर आधारित पत्र*

13. भारतीय संगीत के रत्न :लक्ष्मी नारायण गर्ग,
14. हिन्दुस्तानी संगीत के रत्न :सुशील कुमार चौबे
15. हमारे संगीत रत्नःसंगीत कार्यालय हाथरस
16. ताल दीपिका, भाग 2 से 4 तक : श्रीमती मन्नू जी मृदंगाचार्य, वाराणसी।
17. हस्तलिखित पोथी पर आधारित : विद्याशंकर अनिलेश

घराने से प्राप्त साक्षात्कार व प्रश्नोत्तरी के आधार पर

1. श्री रामजीलाल शर्मा, मृदंगाचार्य (रामपुर) पं0 गया प्रसाद के पौत
2. श्री एस.के. शुक्ल, मृदंगाचार्य (रामपुर) पं0 गया प्रसाद के प्रपौत
3. डॉ0 चितरंजन देवी शुक्ल, मृदंगाचार्य (रामपुर) पं0 गया प्रसाद के प्रपौत
4. श्री विजय शंकर मृदंगाचार्य (बदायूँ) घराने की गुरू–शिष्य परम्परा में
5. डॉ0 मीनू सक्सेना, मृदंगाचार्य (रामपुर) घराने की गुरू–शिष्य परम्परा में
6. श्री गौरव शंकर, मृदंगाचार्य (बरेली) घराने की गुरू–शिष्य परम्परा में
7. श्री विपिन कुमार, तबला कलाकार (इलाहाबाद), अध्यक्ष, प्रो0 लालजी संगीत रिसर्च ऐकेडेमी, इलाहाबाद।
8. डॉ0 ममता सक्सेना, तबला कलाकार (बरेली) संगीत प्रवक्ता।

पत्र एवं पत्रिकाएं

1. छाया नट त्रैमासिक पत्रिका जनवरी संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ।
2. मृदंग अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस।
3. साप्ताहिक भारतीय दिव्य दर्शन, हरिमोहन लाल श्रीवास्तव।
4. संगीत अंक, प्रभुलाल गर्ग एवं विक्रमादित्य सिंह